ध्रुवस्वामिनी

Dr. sharmela yadav

BA 1st Hindi

- **ध्रुवस्वामिनी का कथासार**

ध्रुवस्वामिनी जयशंकर प्रसाद का सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है | इसमें नाटककार ने गुप्त युगीन प्रमुख घटना पर प्रकाश डालते हुए अधिकारों की समस्या को उठाया है |गुप्त सम्राट चंद्रगुप्त ने अपने जीवन काल में बड़े पुत्र राम गुप्त के कायर, आयोग और विलासी होने के कारण अपने छोटे पुत्र चंद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था | सम्राट चंद्रगुप्त की विजय यात्रा के समय ध्रुवस्वामिनी के पुत्र ने अपनी पुत्री ध्रुवस्वामिनी को गुप्त कुल की बनाने के लिए समर्पित किया था | उस समय चंद्रगुप्त का उत्तर अधिकारी बनना निश्चित था | इसलिए ध्रुवस्वामिनी चंद्रगुप्त की वांग दत्ता थी | किंतु समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात महामंत्री शिखर स्वामी ने बड़े पुत्र के अधिकार की दुहाई देकर तथा छल कपट द्वारा राम गुप्त को उत्तराधिकारी बनाकर उसे से आसन पर बैठा दिया | ऐसी स्थिति में ध्रुवस्वामिनी का विवाह वीर राम गुप्त से करवा दिया गया किंतु राम गुप्त की कायरता योग्यता एवं छल कपट के कारण ध्रुवस्वामिनी उसे घृणा करती थी|

प्रथम अंक - अंग आप आराम माला के समीप गिरी पथ पर स्थित राम गुप्त के युद्ध सीवर में ध्रुवस्वामिनी के प्रवेश से होता है | ध्रुवस्वामिनी के पीछे एक लंबी व कुरूप दासी खड्ग लिए चल रही है। ध्रुवस्वामिनी उससे मंदाकिनी के विषय में पूछती है।। परंतु दासी के उत्तर ना देने पर वह नाराज हो जाती है। अपने चारों ओर बोने एवं गूंगे व्यक्ति का समूह देखकर अत्यंत पहचान हो उठती है। राम गुप्त के साथ अपने विवाह को वह अभिशाप समझने लगती है। इस वातावरण से उभर कर वह झरने के किनारे जा बैठती है उसके पास ही खंड गधारिणी दासी बी जाती है तथा वह उससे बात बता देती है कि वह गूंगी नहीं है अपितु वह मुख का कर रही है। ध्रुवस्वामिनी को चंद्रगुप्त स्मरण कराती है और राजा राम गुप्त से कहकर उसका उपकार करवाने को कहती है। ध्रुवस्वामिनी निःसंकोच यह कह देती है कि आज तक राजाराम गुप्त से उस वार्तालाप तक नहीं हुआ। राजा तो सदा विलासियो के साथ मदिरा में लीन रहता है, भला वह किसी के क्या काम आ सकता है।। यह भी बता देती है कि चंद्रगुप्त ने पिता द्वारा दिए गए सभी अधिकार भी छोड़ दिए है। ध्रुवस्वामिनी राम गुप्त और चंद्रगुप्त की तुलना में लीन हो जाती है। उसके हृदय में चंद्रगुप्त के प्रति आकर्षण है। इसका संकेत आशिकों भी मिल जाता है। राम गुप्त यह जानता है कि क्या उसके हृदय में अब भी चंद्रगुप्त के प्रति प्रेम है। ध्रुवस्वामिनी दासी को बताती है कि चंद्रगुप्त को कोई ऐसा साहसिक कार्य नहीं करना चाहिए जिससे कि उसके प्राण संकट में आ जाएं।

राम गुप्त की अयोग्यता और विलासिता के कारण अवसर पाकर शकराज रामगुप्त के शिविर को दोनों ओर से खेल लेता है। यह सूचना पाकर थी कायर एवं निर्लज्ज राम गुप्त अपनी विलासिता में डूबा रहता है उसकी कायरता को भाँपकर शकराज युद्ध की सिंधी के लिए दोनों शर्ते भेजता है, अपने लिए ध्रुवस्वामिनी और अपने सरदारों के लिए मगध के सामंतो की स्त्रियां।

अयोग्य कायर राम गुप्त इन दोनों शर्तों को स्वीकार कर लेता है। इससे एक ही वार से बाहर शत्रु और भीतर के शत्रु करा पा लेना चाहता है। वह अपने महामंत्री शिखर स्वामी को साथ लेकर अपने इस निर्णय को ध्रुवस्वामिनी को सुनने के पास पहुंच जाता है। ध्रुवस्वामिनी उसके इस निर्णय से अत्यंत क्षुब्ध हो उठती है तथा उससे पूछती है-- क्या गुप्त साम्राज्य स्त्री-संप्रदान से बड़ा है? ध्रुवस्वामिनी पूछती है कि विवाह के, समय अग्निदेव के सामने दुख सुख इतना छोड़ने की प्रतिज्ञा क्यों ली थी? किंतु कायर एवं स्वार्थी राम गुप्त पति होने के उत्तरदायित्व को स्वीकार नहीं करता। वह कहता है कि विवाह के समय वह मदिरा बेसुध था तथा उसने ऐसी कोई प्रतिक्षा नहीं की थी।

शिखर स्वामी ने भी राम गुप्त के कथन का समर्थ करते हुए कह दिया कि राजनीति के सिद्धांत अनुसार सब कुछ दे भी राष्ट्र की रक्षा की जानी चाहिए। किंतु ध्रुवस्वामिनी दोनों को फटकारती है कि जो व्यक्ति उसकी रक्षा नहीं कर सकता उसको यह भी अधिकार नहीं कि वह उसके किसी को उपकार रूप में दे दे। शिखर स्वामी के चले जाने के पश्चात वह राम गुप्त से अपनी शक की भीख मांगती है, किंतु राम गुप्त उसकी प्रार्थना ठुकरा देता है । इससे ध्रुवस्वामिनी को अत्याधिक निराशा होती है। इस पर दुर्गा मिनी क्रोध में भरकर उससे कायर आदमी शब्दों से सम्बोधित करती है तथा घोषणा करती है कि अभी उस खून गर्म है, उसे कोई भी उपकार मैं नहीं दे सकता। अपनी रक्षा स्वयं करेगी। वह कटार निकाल लेती है। राम गुप्त भय से कांपने लगता है। समझता है कि वह उसकी हत्या करेगी। ध्रुवस्वामिनी कहती है कि वह ऐसे कायर के जीवन का नहीं करेगी। वह तो स्वयं आत्महत्या करना चाहती है। राम गुप्त हत्या हत्या करता हुआ चलाता है तभी चंद्रगुप्त वहां आ जाता है। वह ध्रुवस्वामिनी को करने से रोकता है कहता है कि उसके रहते आत्महत्या नहीं कर सकती।

रामगुप्त भी शेखरस्वामी को साथ लेकर पुनः वहां आ जाता है। चंद्रगुप्त उन दोनों की उपासना करता है, परंतु शेखर स्वामी कि किसी तरह राजा राष्ट्र की रक्षा करनी चाहिए। मंदाकिनी विरोध करती है कि जा अपने राष्ट्र और समाज की कर सकता, उसकी रक्षा कैसी?इस समस्या का अंत करने के लिए चंद्रगुप्त कहता है कि मैं ध्रुवस्वामिनी का रूप धारण कर सामंत कुमारो के पास जाऊंगा। राम गुप्त और शिखर स्वामी इससे सहमत हो जाते हैं, किंतु ध्रुवस्वामिनी उसे रोकना चाहती है अन्ततः चंद्रगुप्त ध्रुवस्वामिनी और सामंत कुमारों को लेकर सकरात के सीवर की ओर चल पड़ता है।

दूसरा अंक- दूसरे अंक का आरंभ शकराज और उसकी पत्नी को मां के वार्तालाप से होता है। कोमा अपने स्वकथन मे अपने पति के प्रति प्रेम को व्यक्त करती है। पुष्पों को सीचती हुई कोमा रक्त- पिपासु तथा युद्ध प्रिय व्यक्तियों के संबंध में भी सोचती है। प्राण लेने और देने वाले व्यक्तियों के जीवन में वह वास्तविकता को नहीं देखती। इसके अतिरिक्त वह प्रेम के संसार के विषय में भी विचार करती है। वह कहती है कि यौवन का सच्चा सुख प्रेम करने तथा आनंद प्राप्त करने में ही है। कश वह तो प्रेम नंद में लीन रहना चाहती है। एक गीत गाकर कोमा अपने हृदय के उद्गाररो को प्रकट करती है उसी समय हाथ में तलवार लिए हुए शकराज वहां पहुंचता है। शकराज खिगिल दूत के राम गुप्त के शिविर से नया लौटने पर करने लगता है। राम गुप्त दवारा संधि प्रस्ताव ना माने जाने पर वह रक्त की सरिता भाने के फिर कार्य पर विचार करने लगता है। ज्यों ज्यों रात्रि भर्ती जाती है,त्यों त्यों अधीन हो जाता है। तभी खिगिल दुर्ग तोरण मे पालकियो के अमन की सूचना देता है। खिगिल शकराज को ध्रुवस्वामिनी के प्रस्ताव की सूचना भी देता है कि वह पहले अपने एक के आतंक मैं ई है जिससे उस मर्यादा की रक्षा हो सके। शकराज अपनी मर्यादा की बात का मजाक उड़ाता है, परंतु फिर भी उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता है। कोमा उसकी बात पर और क्षुब्ध हो जाती है और कहती है कि राजनीति का प्रतिशोध क्या एक नारी को कुछ ले बिना पूरा नहीं हो सकता। उसी समय अचार्य मिहिर देव । का प्रवेश होता है वह कोमा की मुखाकृति देखकर दुख के कारण को जानना चाहता है

कोमा के पिता शकराज को चेतावनी देते हैं कि अपनी वांग्दत्ता के साथ अन्याय करने के परिणाम को तुम्हें भुगतना पड़ेगा। शकराज उसकी एक भी नहीं सुनता। कोमा अपने पिता के साथ वहां से चली जाती है। तभी ध्रुवस्वामिनी के आने की सूचना पाकर शकराज आज उसे एकांत में मिलता है। स्त्री वेश में चंद्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी अपने आप को ध्रुवस्वामिनी कहते है। शकराज एक के स्थान पर दो दो सुंदरिया आकर चकित हो जाता है। परंतु चंद्रगुप्त अपने असली वेश में आकर शकराज द्वंद युद्ध के लिए ललकार का है। युद्ध में शकराज मारा जाता है। तथा चंद्रगुप्त को मामूली कहावतें हैं। बाहर कुमार युद्ध करते हैं। वे अंदर पहुंचकर चंद्रगुप्त और ध्रुवस्वामिनी को घेरकर ध्रुवस्वामिनी की जय जयकार का नारा लगाते हैं। यही दूसरा अंक समाप्त हो जाता है।

तीसरा अंक- शक राज के दुर्ग समाचार सुनकर ध्रुवस्वामिनी से भेंट करने के लिए राम गुप्त के आगमन संबंधी कोलाहल से तीसरा अंक आरंभ होता है शक राज के दुर्ग के भीतर एक कमरे में ध्रुवस्वामिनी चिंता मग्न बैठी है। बाहर कोलाहल होता है एक सैनिक आकर सूचित करता है कि विजया का समाचार सुनकर राजाराम गुप्त भी आ गए हैं वह पूछ रहे हैं कि महादेवी कहां है। ध्रुवस्वामिनी आदेश देती है कि क्या के बिना कोई भी अंदर ना जाए। मैं इस समय बहुत थक गई हूं। सैनिक से चंद्रगुप्त के घाव के बारे में पूछती है। सैनिक बताता है कि घाव चिंताजनक नहीं है और कुमार इस समय विश्राम कर रहे हैं। सैनिक के चले जाने के बाद मंदाकिनी वहां ध्रुवस्वामिनी को बधाई देने के लिए आते हैं। उसके मुख से महादेवी के स्थान पर सब सुनकर ध्रुवस्वामिनी बहुत खुश हो जाती है। तभी उपद्रवो के शांत होने पर शांति कर्म के लिए पुरोहित आ जाते हैं, किंतु ध्रुवस्वामिनी कहती है कि तुम्हारा कर्म कांड और शास्त्र सब कुछ असत्य है। स्त्री की बुरी दशा की गई है। तुमने जो मेरा राक्षस विवाह करवाया उसका अंत जन सहार मे हुआ है। शकराज रक्त अरिजीत लाश अभी भी को मिल सकती है। किंतु रोहित कहता है कि स्त्री और पुरुष का विश्वास ही तो विवाह कहा जाता है। यदि ऐसा नहीं है तो विवाह विवाह नहीं खेल है इस संबंध में वह धर्मशास्त्र के विधान को पुनः देखने की बात कह कर चला जाता है।

चंद्रगुप्त

- ध्रुवस्वामिनी नाटक के प्रमुख नायक चंद्रगुप्त है। यूं तो यह नाटक नायिका प्रधान नाटक है। मौलिक दृष्टिकोण से एवं शास्त्र सम्मत विचारधारा के आधार पर चंद्रगुप्त ही प्रमुख नायक कहलाने का अधिकारी है। ध्रुवस्वामिनी नाटक की नायिका ध्रुवस्वामिनी का केंद्रीकरण किया गया है, जिसके इर्द-गिर्द चंद्रगुप्त की गतिविधियां साकार हो उठती है।
- चंद्रगुप्त का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं सुंदर है। खोया हुआ राज सिंहासन प्राप्त कर वह अपने आप को धन्य मानता है। उससे छीन ली गई उसकी बागदत्ता पत्नी ध्रुवस्वामिनी की प्राप्ति से उसकी मनोदशा सुदृढ़ एवं सबल हो जाती है, जिससे वह अपने आप को सफल भोगी मानता है।
- चंद्रगुप्त की सुंदरता अति मनोरम है, जो शकराज को भी फेरे में डाल देता हैं। देश की एकता एवं अखण्डता के लिए चंद्रगुप्त स्वयं कमर कस लेता है और दुश्मनों को मार गिराता है। चंद्रगुप्त अपने बड़े भाई का सम्मान करते हुए पिता की मृत्यु के बाद उसे ही राज सिंहासन का अधिकारी बनाता है,जो उसकी चारित्रिक विशिष्टता का एवं चारित्रिक गुणों का परिचायक है। वह नहीं चाहता था कि बड़े भाई का वह विरोधी बने। रामगुप्त एवं शिखर स्वामी के षडयंत्र को चंद्रगुप्त आसानी से खत्म कर सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया। राम गुप्त की विलासिता भरी जीवन लीला से देश की समस्त व्यवस्था जर्जर हो गई थी। चंद्रगुप्त यह सब देखता रहा, उसने दखल अंदाजी करना उचित नहीं समझा कि कहीं प्रजा इसे विरोधी या राजा बनने का अधिकारी न समझे।नारी के वेश में वह शकराज के शिविर में प्रवेश कर उसका वध कर देता है और दुर्ग पर अधिकार सुरक्षित कर लेता है।

जैसा कि चंद्रगुप्त अपने पिता द्वारा घोषित ध्रुवस्वामिनी का पति था, कुल की मर्यादा के लिए उसने ध्रुवस्वामिनी और राजपाट का त्याग किया हुआ था।जब देश में अराजकता फैल गई अर्थात पानी सिर से ऊपर आ गया, स्थिति अनियंत्रित हो गई, तब चंद्रगुप्त ने कमान संभाला और उसके सामंतों तो ने राम गुप्त का वध कर दिया। तदुपरांत शास्त्रोक्त विधि से विधवा ध्रुवस्वामिनी का पुनर्विवाह चंद्रगुप्त के साथ संपन्न हुआ।

इस प्रकार *चंद्रगुप्त* का जीवनकाल संघर्षमय था। वह बड़ा ही धैर्यवान एवं विनयी सर्वभाव का था। उसने अपने जीवन को सदैव मर्यादित रखा और जनता के सुख समृद्धि के लिए सदैव सचेष्ट रहा। चंद्रगुप्त में प्रेरक शक्ति की भरमार थी। वह एक आदर्श प्रेमी एवं मर्यादा का भरपूर पोषक था।वह वास्तव में शौर्य-वीरता का मूर्ति था, जो शकराज को लरकारते हुए उसका वध कर दिया था। उसके आकर्षक व्यक्तित्व के कारण ध्रुवस्वामिनी उसकी प्रेम दीवानी थीं। चंद्रगुप्त में कर्तव्यपरायणता जैसे गुण कूट-कूट कर भरे थे।शक शिविर पर अधिपत्य कर लेने के बाद यदि वह चाहता तो शासन व्यवस्था को अपने हाथों में ले लेता और राम गुप्त को वहां से बेदखल कर सकता था, पर उसने ऐसा नहीं किया तथा धैर्य से काम लिया।चंद्रगुप्त के चरित्र से यह चित्रित हो जाता है कि वह उच्च कुल का जन्मा है। उसने अपने जीवन के हर क्षेत्र में नैतिकता का सहारा लिया था।

चंद्रगुप्त का चरित्र भारतीय इतिहास की विरासत है। उसकी महानता अनुकरणीय है।वह मर्यादा के बोझ तले मगध देश का समुचित विकास किया था।

शकराज

- ध्रुवस्वामिनी नाटक के घटनाक्रम में शकराज खलनायक के रूप में चरितार्थ हुआ है।वह पूरे नाटक में अहं की भावना से मण्डित है।वह बड़ा ही क्रूर एवं मिथ्या अहंकारी है। जैसा कि उसकी अपनी सेना है, वह स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व करता है। वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी,कूटनीतिज्ञ एवं युद्ध कला में पारंगत है। पर इसके साथ-साथ वह बड़ा ही भोग विलासी स्वभाव का है।वह पराक्रम पर विश्वास रखकर भाग्य पर विश्वास नहीं रखता है। वह अपने शत्रुओं से दुर्व्यवहार करने का समर्थक है। वह हमेशा दुर्नीति को अपनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहता है।
- कोमा उसके प्रेम जाल का शिकार बनती है।वह भाग्य को बलवान मानती है और शकराज इस बात का विरोध करते हुए कहता है-------

सौभाग्य और दुर्भाग्य मनुष्य की दुर्बलता के नाम है। मैं तो पुरुषार्थ को ही सबका नियामक समझता हूं। पुरुषार्थ ही सौभाग्य को खींच लाता है।"

शकराज बड़ा इर्सालु, शंकालु एवं हिंसक है, जो सदैव प्रतिशोध की भावना से लिप्त रहता है। वह ध्रुवस्वामिनी को उपहार में लेकर राम गुप्त से संधि करना चाहता है। कोमा द्वारा उसको समर्थन नहीं मिलता है।शकराज रामगुप्त का पर्याय बना हुआ है। वह भी भोग-विलासिता में लिप्त रहने वाला मदांध व्यक्ति है। वह सुरा और सुंदरी का स हचर बना हुआ है। उसके सामंत उसकी विलासिता संबंधी गतिविधियों से पूर्णत: अवगत हैं।

शकराज अपनी भावी पत्नी कोमा की उपेक्षा कर ध्रुवस्वामिनी की प्रतीक्षा में आंखें बिछायै बैठा रहता है। वह अहंकारी होने के कारण कोमा के प्रेम को बिल्कुल महत्व नहीं देता है तथा उसके प्रेम अनुरोध को बड़ी निष्ठुरतापूर्वक ठुकरा देता है। वह अपने धर्म गुप्त आचार्य मिहिदेव के नीतिपूर्ण निर्देशों पर कान नहीं देता और प्रत्युत्तर में कठोर वचन बोलता है।

शकराज के विलासी और दुराचारी हृदय की स्थिति उस समय स्पष्ट हो जाती है, जब वह ध्रुवस्वामिनी के साथ चंद्रगुप्त को एक सुंदर सजी-धजी नारी के वेशभूषा में नारी मानकर अंगीकार करने पर तुल जाता है। उसके इन कामुक व्यवहार से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस पर भोग लिप्सा का भूत कितना ज्यादा सवार है।वह हमेशा अपनी झूठी पुरुषार्थ की डींगहाकता है, वह आंतरिक भाव से बिल्कुल कमजोर एवं डरपोक सिद्ध होता है।वह धूम्रकेतु के दर्शन मात्र से भयभीत होकर कुछ करने के लायक नहीं रह जाता है ।

शकराज एक असफल प्रेमी के रूप में यहां चरितार्थ हुआ है। इतना ही नहीं, वह दूषित मनोवृति का शिकार है। वह बिल्कुल तुच्छ स्वभाव का व्यक्ति है। अहंकारी होने के कारण ही उसका सर्वनाश हुआ है।

रामगुप्त

- रामगुप्त समुद्रगुप्त का जेष्ठ पुत्र व मगध का सम्राट है, जो दुर्नीति से युक्त एवं दुराचारी है।वह चंद्रगुप्त का अग्रज है और हर समय वह चंद्रगुप्त की उपेक्षा करता रहा है। यद्यपि चद्रगुप्त सम्राट बनने के योग्य है तथापि वंश परंपरा की मान्यताओं एवं मंत्री शिखरस्वामी की कूटनीति से वह सम्राट नहीं बना और राम गुप्त ही सम्राट बना तथा समयानुकूल शिखरस्वामी अपनी राजनीति की रोटी सेंकने एवं स्वार्थ सिद्धि में सफल हुआ।रामगुप्त ध्रुवस्वामिनी का असफल पति है। राम गुप्त का स्वभाव अति विलासिता पूर्ण एवं मर्यादित है, जिसे भले बुरे का तनिक भी ज्ञान नहीं है। सुरा और सुंदरि उसके जीवन का आधार स्तंभ है, जिनके सहारे उसने अपने जीवन को नरक बना लिया था।वह इतना लोभी एवं प्रपंची था कि वह समस्त राज्य पर अनाधिकारीक तौर पर अपना आधिपत्य जमा लेना चाहता था। वह इतना कायर एवं डरपोक था कि शकराज के समक्ष युद्ध करने में सफल नहीं हुआ और संधि प्रस्ताव के तहत अपनी पत्नी ध्रुवस्वामिनी का सौदा कर डाला। उसे शकराज के पास भेज दिया। पर ध्रुवस्वामिनी बड़ी वीरता पूर्वक उस दुष्ट से मुकाबला किया और अपने मान सम्मान पर आंच नहीं आने दी। राम गुप्त को इस नातक के प्रायः सभी पात्रों से जैसे सामंत कुमार,मंदाकिनी,पुरोहित, चंद्रगुप्त,कोमा आदि की दृष्टि में बिल्कुल पतित एवं निकृष्ट बताया गया है।

वह बड़ा ही महत्वाकांक्षी, निरंकुश एवं अन्य शासक था। उसका जनाधार नहीं के बराबर था। शुरुआती दौर में मंत्री शिखरस्वामी उसका हिमायती रहता है,पर अंत में मंत्रिमंडल द्वारा दिये गये निर्णय के संदर्भ में उसका विरोधी बन जाता है। रामगुप्त के दुर्व्यवहार के कारण कोई भी उसका हमदर्द या शुभचिंतक नहीं होता है।

ध्रुवस्वामिनी जैसी विश्व सुंदरी पत्नी पाकर वह उसके सुख एवं प्रेम से वंचित है।उसके मूर्खता पूर्ण व्यवहार से वह भी संबंध विच्छेद कर लेती है।रामगुप्त पाषाण एवं क्रुर सर्वभाव का शासक है,जो लोकप्रियता प्राप्त करने में असफल रहता है।उसका इतना नैतिक पतन हो चुका होता है की उसे उचित या अनुचित का ज्ञान नहीं रहता।अपनी धर्मपत्नी को पर-पुरुष शकराज को सौंप देना उसके कुकृत्य एवं हृदयहीनता का द्योतक है।

रामगुप्त अपने कुल की मर्यादा का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता, क्योंकि शिखरस्वामी की मंत्रणा से उसका विवेक समूल नष्ट हो गया है।वह बिल्कुल कायर एवं कमजोर प्रमाणित हुआ है-----मन्दाकिनी उसकी भीरूता के संदर्भ में कहती है---- " वीरता जब भागती है तब उसके पैरों से राजनीतिक छल-कपट की धूल उड़ती है।"

रामगुप्त से मुक्ति पाने के उद्देश्य से चंद्रगुप्त जी- जान से देश की मर्यादा की रक्षा करने में सक्षम होता है। शकराज और रामगुप्त की हत्या कर चंद्रगुप्त ने अपनी शौर्यता का परिचय दिया है।अधिक विलासितापूर्ण जीवन शैली से रामगुप्त नपुंसक हो गया था।प्रसाद जी ने इसको क्लीव बताया है।वह अपनी रक्षा करने में असमर्थ है तो भला समस्त देशवासियों की रक्षा किस प्रकार कर सकेगा।उसका चरित्र इतना गिरा हुआ है कि वह सामान्य से सामान्य व्यक्ति से आंखें मिलाने के योग्य नहीं है। राष्ट्र की गरिमा अक्षुण्ण रखने में वह बिल्कुल अयोग्य प्रमाणित हुआ है।

शिखरस्वामी

- ध्रवस्वामिनी' नाटक में शिखरस्वामी का एक प्रकार से कुटिल,अवसरवादी, धूर्त्त,प्रवंचक,चाटुकार, मर्यादाहीन, दंभ, कलहकारी,स्वार्थी, निष्ठुर, कुकर्मी एवं चरित्रहीन के रूप में चरितार्थ हुआ है।उसकी कूट नीति एवं षड्यंत्र से चंद्रगुप्त के स्थान पर राम गुप्त वंश परंपरागत दृष्टि से सम्राट बनता है।गुप्त कुल का मंत्री होते हुए भी उसने अपने दायित्वों का निर्वाह समुचित ढंग से नहीं किया है।वह सर्वथा अयोग्य सिद्ध हुआ है।उसकी राजनीतिक प्रतिभा के दुरुपयोग से षड्यंत्र एवं कुटिल योजनाओं के तहत राम गुप्त को कठपुतली बनाए रखने में सक्षम हो जाता है।

  शिखरस्वामी के प्रति राम गुप्त कृतज्ञ रहता है, जिसके बदौलत उसे राज सिंहासन मिला है और शिखर स्वामी मौकापरस्त होकर राम गुप्त पर हमेशा हावी रहता था। राम गुप्त को उचित परामर्श न देकर वह हमेशा गलत रास्ते पर चलने को प्रेरित करता था, जो शासन व्यवस्था के लिए अनुचित था।

शिखर स्वामी की राजनीतिक गतिविधियां अत्यंत धूर्तता एवं प्रवंचना से परिपूर्ण था।राष्ट्र की रक्षा का ध्यान न रखकर वह अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता था। एक मंत्री के रूप में उसका आत्म बल बिल्कुल कमजोर था। सही मंत्रणा नहीं देने के कारण वह राम गुप्त को निस्सहाय छोड़ रखा था। शकराज को ध्रुवस्वामिनी सौंपने के संदर्भ में वह राम गुप्त की कूटनीति को सफल बनाने में सहयोगी बन गया था। वह स्वयं ध्रुवस्वामिनी के समक्ष अत्यंत निष्ठुर एवं नीर्लज्जतापूर्वक उसके शक शिविर में जाने का भरपूर समर्थन करता था समय की नजाकत को देखते हुए वह गिरगिट की तरह रंग बदलने में सक्षम था और राम गुप्त को उचित-अनुचित का ध्यान नहीं होने देता था। परिस्थितियों के अनुकूल अपने आप को ढाल लेने में वह बहुत ही माहिर था।वह अपने को बचाने रामगुप्त का भी साथ छौड़ देता है। व्यवहारिक तौर पर शिखरस्वामी अमात्य के नाम पर कलंकित व्यक्ति था।